



मध्यप्रदेश में मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाले कारको का विश्लेषणात्मक अध्ययन

रवि दायमा

शोधार्थी

राजनीति विज्ञान एवं लोकप्रशासन अध्ययनशाला विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.)

सारांश —

यह शोध मध्यप्रदेश में मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाले कारको के अध्ययन पर केन्द्रित है। शोध में यह भी अध्ययन किया जाएगा की वो कोन से कारक एवं मुद्दे हैं जिनसे मतदान व्यवहार प्रभावित होता है। प्रस्तुत शोध मतदान व्यवहार के कारक पर आधारित है।

प्रस्तावना —

मध्यप्रदेश का मतदान व्यवहार क्षेत्रीय राज्य और देश की हर प्रकार की राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। मध्यप्रदेश का मतदाता राज्य और देश की राजनीतिक दिशा व दशा तय करने में अहम योगदान देता है। मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाले कारक विभिन्न होते हैं जो समय के साथ-साथ बदलते रहते हैं। स्वतंत्रता पूर्व भारत में सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार को नहीं अपनाया गया था परन्तु स्वतंत्रता पश्चात सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार को अपनाया गया। भारत में सर्वप्रथम मतदान करने की न्यूनतम आयु 21 वर्ष थी परन्तु 61 वे संविधान संशोधन अधिनियम 1989 के द्वारा मतदान करने की न्यूनतम आयु 18 वर्ष कर दी गई इसका अर्थ है कि 18 वर्ष की आयु पूरी करने वाला प्रत्येक व्यक्ति मतदान करने के योग्य माना जाता है।

मध्यप्रदेश में मतदाताओं की संख्या 5 करोड़ 60 लाख 60 हजार 925 हो गई है। जिसमें से पुरुष मतदाता 2 करोड़ 88 लाख 25 हजार 607 और महिला मतदाता 2 करोड़ 72 लाख 33 हजार 945 एवं थर्ड जेंडर 1373 है। रक्षा सेवा के मतदाता की संख्या 75 हजार 304 है। जिसमें पुरुष 73 हजार 20 और महिला मतदाता 2 हजार 284 है। इनमें 6 लाख 53 हजार 640 वरिष्ठ मतदाता और 5 लाख 5 हजार 146 दिव्यांग मतदाता और 99 अप्रवासी भारतीय हैं।

साहित्य समीक्षा —

रावलोत प्रेमसिंह और पुरोहित कुसुमलता इन्होंने अपने शोध अध्ययन में राजनीति में मतदान व्यवहार का स्वरूप के बारे में विस्तृत वर्णन किया जाता है। इन्होंने भारत की राजनीति एवं राज्यों की राजनीति में मतदान व्यवहार के अध्ययन को उजागर किया है कि मतदान में राजनीति के व्यवहार का क्या प्रभाव मतदाता के ऊपर पड़ता है।

कोठारी रजनी –

कास्ट पॉलिटिक्स इन इण्डिया, में जाति आधारित राजनीति को विस्तार से समझाया है जिसमें भारत में जाति भी राजनीति को उजागर करते हैं इन्होंने अध्ययन में पाया भारत की राजनीति जातियों के इर्द गिर्द ही दिखाई देती है। 1950 के काल से लेकर 1980 तक भारत की राजनीति जातियों के आसपास चक्कर लगाती हुई दिखाई देती है।

मतदान व्यवहार से आशय –

मतदान व्यवहार से आशय मतदाताओं की मानसिक स्थिति से होता है जिससे मतदाता प्रभावित होकर मतदान करते हैं। मतदान व्यवहार मतदाताओं के कई पहलुओं को प्रदर्शित करता है। मतदाताओं का मतदान व्यवहार स्थानीय, क्षेत्रीय, राज्यीय एवं देशीय चुनावों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। मतदान व्यवहार मतदाताओं की राजनीतिक और मनोवैज्ञानिक स्थिति को प्रदर्शित करने में मदद करता है।

पॉल एप्पलबी के अनुसार – मतदान व्यवहार व्यक्तियों का सरकार से सीधा संबंध है।

कार्ल जे. फ्रेडरिक के अनुसार – मतदान व्यवहार प्रजातांत्रिक शासन को वैधता प्रदान करने की प्रक्रिया में एक समस्या है। अर्थात् मतदान करते समय व्यक्ति सरकार को कार्य करने के लिए वैधता प्रदान करता है। मतदाता मतदान के माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति को प्रदर्शित करने का प्रयास करता है।

शोध प्रविधि –

इस शोध पत्र के लिए अधिकांशतः शोध सामग्री द्वितीयक स्रोतों से ग्रहण की गई है। जिसमें शोध सामग्री प्रसिद्ध पुस्तकों, पत्र पत्रिकाओं व समाचार पत्रों आदि से प्राप्त की गई है। इसमें शोधकर्ता ने शोधपत्र में ऐतिहासिक तथा वर्णनात्मक दृष्टिकोण का प्रयोग किया है तथा शोधकर्ता ने अपने व्यक्तिगत अनुभवों को स्थान दिया है।

भारत एवं मध्यप्रदेश में मतदान व्यवहार का इतिहास –

भारत में मतदान व्यवहार की शुरुआत 1950 के दशक से हुई। 1950 के दशक में ही इण्डियन इंस्टिट्यूट ऑफ पब्लिक ओपिनियन की स्थापना हुई। भारत में मतदान व्यवहार के अध्ययन का श्रेय डॉ. एरिक, डॉ. कोस्टा को दिया जाता है। वही मध्यप्रदेश में मतदान व्यवहार के अध्ययन का श्रेय CSDS को दिया जाता है। मतदान व्यवहार के अध्ययन को सेफोलॉजी कहते हैं जिसकी स्थापना – 1963 को हुई थी।

मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाले कारक मध्यप्रदेश के सन्दर्भ में –

राज्य में मतदान को प्रभावित करने वाले कई कारक हैं, उनमें से कुछ कारकों का विवरण इस प्रकार है –

जाति – भारत एवं मध्यप्रदेश की सामाजिक संरचना शुरुआत से ही जाति व्यवस्था से अत्यधिक प्रभावित रही है। सम्पूर्ण भारत में राजनीतिक दल जाति के आधार पर टिकट दिये जाते हैं एवं जाति के आधार पर ही वोट हासिल करने का प्रयास किया जाता है। रजनी कोठारी अपनी पुस्तक – कास्ट इन इण्डिया पॉलिटिक्स में उन्होंने भारतीय राजनीति में जातिवाद को अस्वीकृत कर दिया है। इनके अनुसार जिसे हम जातिवाद कहते हैं वह वास्तविक रूप में जातियों का राजनीतिकरण है।

धर्म – राजनीति दल चुनावी राजनीति में मतदाता को प्रभावित करने के लिए धार्मिक मुद्दे पर बयानबाजी करते हैं। जिससे मतदाता प्रभावित हो जाते हैं।

सामाजिक आर्थिक स्थिति –

प्रदेश में विकास की विगत 20 वर्षों में लोगो के बीच सामाजिक-आर्थिक विकास रोजगार, गरीबी उन्मूलन आदि महत्वपूर्ण कारक के रूप में सामने आए हैं। वैश्वीकरण और भूमण्डलीकरण के वजह से मतदाता की प्राथमिकता आर्थिक विकास रही है इसलिए मतदाता वोट देते समय आर्थिक विकास को ध्यान में रखकर वोट करते हैं।

करिश्माई नेतृत्व एवं व्यक्तिगत गुण –

मध्यप्रदेश में सन् 2004 के बाद जब से भाजपा पार्टी के कर्मठ नेता शिवराज सिंह चौहान ने प्रदेश की बागडोर अपने पास संभाली है तब से प्रदेश में भाजपा को वोट बैंक बढ़ा है। और शिवराज के नेतृत्व में भाजपा पार्टी प्रदेश में अपने पैर पसारने में कामयाब रही। अगर बात करें 2023 विधानसभा चुनाव की तो शिवराजसिंह चौहान की जनकल्याणकारी योजना लाडली बहना योजना की एक तरफा आंधी चली उसी प्रकार लोकसभा चुनाव 2024 में भाजपा नेतृत्व वाली पारी नरेन्द्र मोदी की सरकार ने प्रदेश में विपक्ष पार्टी के चारों खाने चित्त कर दिये। यह कारनामा शिवराज सिंह चौहान व्यक्तिगत गुण के कारण तथा नरेन्द्र मोदी करिश्माई नेतृत्व के कारण ऐसा कर पाने में सफल रहे।

विचारधारा –

राजनीति में विचारधारा का प्रभाव देखने को मिलता है। जैसे – समावादी, धर्मनिरपेक्षता कल्याणकारी राज्य, गरीबी उन्मूलन 1960 से 80 दशक में मतदाता ने इनसे प्रभावित होकर मतदान किया वर्तमान राजनीति में राजनीतिक दल अपनी विचारधारा को मतदाता को आकर्षित करने की कोशिश की जाती है।

स्थिर सरकार –

दल-बदल के कारण राजनीतिक अस्थिरता उत्पन्न हो जाती है जिससे सरकार ठीक से कार्य नहीं कर पाती है। ऐसे में मतदाता एक स्थिर सरकार को बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

दलों का प्रदर्शन –

राजनीतिक दल चुनावी माहोल में अपना-अपना चुनावी घोषणा पत्र जारी करते हैं जिसमें दल पार्टी के एजेंडे को मतदाताओं के सामने रखते हैं जिसमें मतदाताओं से किए गये वादे तथा सत्तारूढ़ पार्टी का प्रदर्शन, साथ ही उसके द्वारा किये गये कार्यों का लेखा-जोखा होता है। राजनीतिक दलों के द्वारा चुनावी घोषणा पत्र जनता के सामने रखा जाता है ? जिसके माध्यम से मतदाता को आकर्षित किया जा सके।

शिक्षा का स्तर –

मतदान व्यवहार को प्रभावित करने में शिक्षा का स्तर भी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। राजनीतिक दलों के द्वारा चुनावी समय में मतदाताओं को प्रभावित करने वाली बयानबाजी की जाती है। जिससे अशिक्षित मतदाता ज्यादा प्रभावित होते हैं तथा शिक्षित मतदाता अपने हितों को ध्यान में रखकर मतदान करते हैं।

विविध कारक –

उपरोक्त कारकों के अलावा कई अन्य कारक भी मतदान व्यवहार को प्रभावित करते हैं जैसे स्थानीय समस्या, भाषायी अलगाव, उम्मीदवारों से संबंध, परिवर्तन बदलाव की इच्छा, किसी गणमान्य व्यक्ति के कहने मतदान व्यवहार को प्रभावित किया जा सकता है।

निष्कर्ष –

उपरोक्त कारको मे से कोई एक कारक कभी भी मतदान व्यवहार का कारक नहीं बनता अपितु इनमें से एक से अधिक कारको से प्रभावित होकर मतदाता मतदान करते हैं।

हमारे यहाँ मतदाता जाति, धर्म, सम्प्रदाय के नाम पर मतदान करते हैं। लोकतांत्रिक गणराज्य इन दृष्टिकोणों से ऊपर उठकर मतदान करना चाहिए जिससे लोकतांत्रिक गणराज्य का का ह्रास न हो।

सन्दर्भ ग्रंथसूची –

1. कश्यप सुभाष, “गठ बंधन की सरकार और भारत में राजनीति” प्रकाशन एमबीडीटी नई दिल्ली 1997।
2. कटारिया सुरेन्द्र, “भारत मे लोक प्रशासन” – आर.बी.एस.ए. पब्लिशर्स जयपुर
3. वैश्य कल्पना, “भारतीय लोकतंत्र में मतदान व्यवहार” नवभारत प्रकाशन
4. रावलोत प्रेमसिंह और पुरोहित कुसुमलता, “राजनीति में मतदान व्यवहार का स्वरूप”, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ हिन्दी रिसर्च, वाल्यूम 7, इश्यू 2021, पृ. 35–37।
5. कुमार संजय, “भारत में मतदान व्यवहार : अध्ययन का इतिहास और उभरती चुनौतियाँ”, 2023 प्रतिमान 1, पृ. 321–345
6. गोस्वामि भालचन्द्र, “भारत में चुनाव सुधार : दशा व दिशा”, प्वाइंटर पब्लिशर्स हाउस, नई दिल्ली, 1997, पृ. 8
7. कोठारी रजनी, “पॉलिटिक्स इन इण्डिया”, ओरियन्ट लोगमिन लिन, नई दिल्ली 1982
8. बी.एम. सिरिसकर, “पॉलिटिकल बिहेवियर इन इण्डिया” मानकतला बम्बई
9. वैश्य कल्पना, “भारतीय लोकतंत्र मे मतदान व्यवहार” नवभारत प्रकाशन
10. भद्रसेन रेखा, “मध्यप्रदेश में लोकसभा चुनाव एवं मतदान व्यवहार : एक विश्लेषण”, प्रथम संस्करण, 2018, शिवालिक प्रकाशन
11. कुमारी मिथिलेश, “भारत में चुनाव और मतदान व्यवहार” श्रृंखला एक शोध परक वैचारिक पत्रिका, वेल्यू-5 इश्यू-4 दिसम्बर 2017
12. सिसोदिया वाय.एस., ‘मध्यप्रदेश में भाजपा की व्यापक जीत की व्याख्या’, इकोनॉमिक एण्ड पॉलिटिकल विकली, खण्ड 54, अंक 34, 24 अगस्त 2019
13. समाचार पत्र – दैनिक भास्कर 4.12.2023, नई दुनिया 18.11.2023, पत्रिका 03.12.2023
14. पत्रिकाए – इण्डिया टुडे अक्टूबर 2023